



ASIA ARCHIVES

2676

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ गणं ॥ ॐ सर्वत्र कुलसंयुक्तः सखाध कपत्रगणः त्रिमूर्त्यं
प्रदुःखं शिवं च नाघनसमश्रुति ॥ त्रिनृपुंसि गणं कृतं गंगात्रयसंज्ञितं सत्यवर्णं क
वल्यानं कपालं मकुठकलं ॥ त्रिनरसि सूर्यं तदंशं पञ्चगलसमगिनं ॥ वज्रपयाध्या
या गंधं गङ्गां तनका मूकं किं नरावयत्ताथं ब्रह्मयागमयत्तं सदा ॥ नत्वा याग
मयत्र ताथं यागिनी गननायकं ॥ गत्वा धनमहं वक्रुः कुतः मध्यमदत्तनधमना नू
क्रुतुं दत्तानि गयस्त्वसाधनक्रुयात्क्रुतादिसंशुद्धिमन्त्रि यागपत्राय नः ॥ चउ
मकुलमध्यस्थं हृदि हंकारसमूहं ॥ पंक्तिमूचिकगणं तं तवयत्समाहिता ॥
कल्लो जीकात्रउपप्रंदराणु वउमकुतं ॥ तस्य मध्यस्थं हंकारं गननाय पंक्तिवय

गुः॥ उं ङ्क्रीं क्रीं सर्वरुहिरुं रुहः॥ त्रकृष्णकात्रसंज्ञागवसूयावस्रत्रायक॥ वाम
सकात्रसंज्ञागवसूयावस्रत्रायक॥ उं ङ्क्रीं क्रीं सर्वरुहिरुं रुहः॥ त्रकृष्णकात्रसंज्ञागवसूयावस्रत्रायक॥ वाम
नाउं पुयत्रसकात्रं पुनिकुं रुहः॥ त्रकृष्णकात्रसंज्ञागवसूयावस्रत्रायक॥ उं ङ्क्रीं क्रीं सर्वरुहिरुं रुहः॥ त्रकृष्णकात्रसंज्ञागवसूयावस्रत्रायक॥ वाम
कं गतिराकनदग्धविलवयतु॥ उं ङ्क्रीं क्रीं सर्वरुहिरुं रुहः॥ त्रकृष्णकात्रसंज्ञागवसूयावस्रत्रायक॥ उं ङ्क्रीं क्रीं सर्वरुहिरुं रुहः॥ त्रकृष्णकात्रसंज्ञागवसूयावस्रत्रायक॥ वाम
गमस्त्रेनाथमात्मानं त्रवयतुसूचि॥ ॥ **धूपयाय**॥ उं ङ्क्रीं क्रीं सर्वरुहिरुं रुहः॥ त्रकृष्णकात्रसंज्ञागवसूयावस्रत्रायक॥ उं ङ्क्रीं क्रीं सर्वरुहिरुं रुहः॥ त्रकृष्णकात्रसंज्ञागवसूयावस्रत्रायक॥ वाम
मध्यज्ञागमस्त्रदेवदवीष्ठावाहनाय ॐ दे धूपं निर्यासमर्हयामिनमानसः
आय॥ उं हं हं १ गीयागमस्त्रायहं रुहः॥ त्रकृष्णकात्रसंज्ञागवसूयावस्रत्रायक॥ उं ङ्क्रीं क्रीं सर्वरुहिरुं रुहः॥ त्रकृष्णकात्रसंज्ञागवसूयावस्रत्रायक॥ वाम
ज्ञागमस्त्रायपाद्याय मनार्घपुनिकुं रुहः॥ ॥ **स्नानवाय**॥ उं हं हं १ ज्ञागम

धूपः सिंहाय

मराय स्वाहा ॥ ॐ ४ ॥ अस्मिन्नाकि न्य स्वाहा ॥ ॐ ५ ॥ आयाय स्वाहा ॥ ॐ ६ ॥ वडा ॥
कि न्य स्वाहा ॥ ॐ ७ ॥ धात्राकि न्य स्वाहा ॥ ॐ ८ ॥ व तात्राकि न्य स्वाहा ॥ ॐ ९ ॥ व डात्र
॥ ॐ १० ॥ सिंहीय स्वाहा ॥ ॐ ११ ॥ यांचितिय स्वाहा ॥ ॐ १२ ॥ मूकि
नीय स्वाहा ॥ ॐ १३ ॥ रूकिनीय स्वाहा ॥ ॐ १४ ॥ वडा प्रणि कु स्वाहा ॥
पूजायास्वामि ॥ ॐ नमोस्तु यागधियुस्तुमावकः नमोस्तु सत्यागाडः
कुलावकः नमोस्तु सत्रा द्विमाहकुदकः नमोस्तु गत्यक नमोमिहंसदा ॥
ॐ सर्वेण वासकं नार्थयागिनी जालनायकं ॥ योगमय तं जगन्नाथः गुरुश्च
दत्तुमसदा ॥ स्मनताकिनी महादेवीः सहजानन्देक रूपिणीः प्रज्ञास्वनास्व

तूपास्मावन्द्यं मातृदायनी ॥ हंका लपत्र मंदव हंका लसिद्धि एं ऊनं हंका
न एव शुभं हंका लायतुं न मास्तुते ॥ हंका मि ॥ स्प ॥ गुंडु मसि ॥
स्प ॥

पाः हाना ज्ञाना न सादवाः ससजा न देव त्रिपिनीः प्रहा हाना स तूपास्माः

वन्दे हं मा उदाय नीः॥ हं कात्र पत्र मंद वः हं कात्र सिद्धि लंजनंः हं कात्र वः उः
न्यः हं कात्रायं उ न मा स्तु ग ॥ • ॥ ~~य न मः स क न~~ ॥ उं न मः श्रवः ण्डी काय ॥
विन्दुं रुं रुं म श का आ सिः धुं गं शु का त्रुं नि लं उ ग वः डा ग रुं द वीः न प्रः
यं न मा स्तु ग ॥ • ॥ ~~यान~~ ॥ उं जी अं हं ह म ह म त्रु वि द्य ना सा य हं रुं रुं स्या हा ॥ • ॥
~~धु प~~ ॥ उं स या गि नी सिद्धि ला कं अ व ग त रः अं हं रुं रुं स्या हा ॥ • ॥ ~~स य वः स क~~ ॥
~~स्वान वाय~~ ॥ उं रुं रुं रुं च डि का य स्या हा ॥ उं उ ग वः उ न मः स्या हा ॥ उं व डि का य न
मः स्या हा ॥ उं दि य त्रु पि न्ये न मः स्या हा ॥ उं सिद्धि या गि न्ये न मः स्या हा ॥ • ॥ पूजा

॥ यो ॥ मा ॥

॥ सैजा ॥ स्था ॥

लास्यास्तुति ॥ • ॥ गुडमस्तुति ॥ कान ॥ म्याकजयं ॥ • ॥ कृष्ण ॥ उं मातृलंबवर्धसंका
सं. त्वं कुरु कुरु विष्णु कं ४ कामतृपीमहादेवी. उग्रच अथ न वस ॥ • ॥ बलि ॥
उं श्री नीलजीगमुका जं ६ का जं धातु कुरु यावहः उरु के अवित्रपात्रं. उग्रपा
त्रवृहद्दत्तः प्रहृष्टिवलिपतिगुरु रदह रव च र ख ख र बा हिर म। हा विष्णु रं
त्रवतृपेन वलिपतिगुरु रं श्रीरुं रुठ साहा ॥ • ॥ पूर्व ॥ कन्या ॥ उं सुखपात्रं
धर्मवत्तु कुरु सुगोकविन्दु कं ४ बुक्का न्यावा हया देवी आनपूर्व्यं नमोस्तुते ॥ • ॥
मद्यपान ॥ उं श्रीं शुं हं हं १ प्रयागस्य विष्णुना जय हं रुठ ॥ • ॥ धूप ॥ उं ॐ ४

॥ कृष्ण ॥

१ श्री ॥ श्री

ॐ श्यायसी उक्ता लोकं क्व गतं २ ग्राह्यं हं रुट् स्यात् ॥ • ॥ **श्याय** ॥ ॐ श्यायसी
पीठवर्णीतः प्रकृमृत्वा हं सवाहनि चतुर्हजा मूलहजा लोका विद्मः पापं च
अपत्रहजा लोका अत्र ह्येकं महत्तुल्यं ॥ • ॥ **स्योवसुधा** ॥ • ॥ **श्याय**
यः ॥ ॐ रुट् रुट् श्यायसी नमः ॥ ॐ अजिगां गते लवाय नमः ॥ ॐ व
अचरु नमः ॥ ॐ रुट् रुट् देवताय नमः ॥ ॐ नागके गत वृकाय नमः
॥ ॐ महापद्मनागताय नमः ॥ ॐ पुष्या मङ्गलाय नमः ॥ ॐ
ॐ विष्णुयाय नमः ॥ ॐ वः अत्र अत्र नाय नमः ॥ ॥ **श्याय**

अदिस्वा सगति इद प्रका स्था तसि गय जाध्वजध मानीय

शुद्धिस्तु सशुभं इह वक्ष्यामि तसि जयय जाध्वजध्व मानीक

लास्यास्तुति ॥ • ॥ **स्तुति** ॥ उं बुद्धायनी हंसमात्रा कनकवर्णसुखमिति नः ॥
उं सुप्रक ताध्वयः बुद्धायनी नमोस्तुते ॥ • ॥ **वलिमिया** ॥ उं उं कालबीज
संज्ञागं पूर्व बुद्धायनी ॥ उं दं वलिः गृहं रं रं रं रं स्वाहा ॥ • ॥ **उं उं नमो नमो** ॥
उं मस्तु बुद्धकपात्रं चः नमो नमो सुप्रतिष्ठिता मा गौडाध्वजवाहया दधीध्वजं नमो नमो
स्तुते ॥ • ॥ **मस्तु नमो** ॥ उं उं गौं हं हं का गौगिरी गौगविष्णुनामय हं रं रं ॥ • ॥
स्तुति ॥ उं उं गौगयनी गौगयनी उं उं गौगयनी गौगयनी उं उं गौगयनी गौगयनी ॥ • ॥ **स्तुति** ॥ उं उं
गौगयनी गौगयनी गौगयनी गौगयनी गौगयनी गौगयनी गौगयनी गौगयनी गौगयनी गौगयनी

॥ स्वध्वज ॥
गौगयनी ॥ २

१ गायत्र्यामान कांयगजा वाकसमधी नयीकां जाउं
 उपररकाकांठकवत्रदपि शुलं • ॥ **सुपरासुजा** ॥ • ॥ **सुनवाय** ॥ उंरुं रुठ
 श्रीदायलीन • उं • श्रीदायनमः स्वाहा ॥ उंरुडचलुनमः स्वाहा ॥ उं
 कवेलायनमः स्वाहा ॥ उं पूनागवृजायनमः स्वाहा ॥ उं गंरवालनागजाय
 नमः स्वाहा ॥ उं कांलागिनीकृपायनमः स्वाहा ॥ उं कत्रं कत्रं जमजमनायनमः
 स्वाहा ॥ • ॥ **पूजाकासासुजा** ॥ १ ॥ **सुप** ॥ उं श्रीदायलीवृषमात्रुचवत्रदपि शु
 त्रक्षत्रिनी • उं वनवर्षसुहृत्संगिः श्रीदायलीनमासुगः ॥ • ॥ **वलि** ॥ उं कं का
 तवीकसंजागं • उं रं त्रश्रीदायलीसर्वश्वतानां • उं देवलिः ॥ गृह २ स्वस्वस्वाहिर

॥ इति कथा ॥ बृह वि ॥ ४

नमो नमो नमो ॥ • ॥ मन्त्राय नमः ॥ उं श्रीं गुरुं हजयन्ति कुण्डविष्णुनाम्नयः
 हं रुं ॥ • ॥ ॥ उं ४ वेङ्कटी विष्णु लोकं अवगतरन्ति पुं हं रुं रुं स्वाहा ॥ • ॥
 ॥ उं वेङ्कटी विष्णु मन्त्राय नमः ॥ गुरुं गुरुं नी ५ क मूखा ॥ उं नमो वरुणाय ॥
 मूलरक्षायां गुरुं वरुणाय नमः ॥ • ॥ स्वरावसुखा ॥ • ॥ स्वानवाय ॥ उं रुं
 रुं ४ वेङ्कटी नमः ॥ स्वाहा ॥ उं उं लय नमः ॥ स्वाहा ॥ उं वीरवदे नमः ॥
 स्वाहा ॥ उं जेजु नमः ॥ स्वाहा ॥ उं अनन्त नागनाथ नमः ॥ स्वाहा ॥ उं पं
 कति वृक्षाय नमः ॥ स्वाहा ॥ उं उं यन्त्रिंशत् नमः ॥ स्वाहा ॥ उं उं उं नमः ॥

१ धउंसां स्या कृगु वाकसि जिह्वा सारव प्लीमधी निल
मः स्वाहा॥ उं धात्रा धक उम उम नाय नमः स्वाहा॥ १ ॥ **पूजा लास्या सुति॥**
ला॥ उं वेष्टु वी गत्रु जत्रु ता॥ जं स्व चक्र गत्रा धत्रा हत्रिग वरु सु उम लंगिः
वेष्टु वी च न मा सुग॥ • ॥ **वलि॥** उं ठ वेष्टु वी गत्रु ज सविः पुनि पत्य ॐ दं
वलिः ४ गृह २ स्व स्व स्वाहि २ वेष्टु वी य हं रुठ स्वाहा॥ • ॥ **दक्षिण सकें गने॥**
उं पा अंक सपत्रा त्यां च॥ त्रक काद्यं ववि नूकेंः को ला त्या वा ह या द वी ध्यान
पूर्व न मा सुग॥ • ॥ **मद्यपान॥** उं की जं हं ह को ला मि नी उ ग वि च्यु ना उम
य हं रुठ॥ • ॥ **धूप॥** उं ठ वात्रा ही रग ला केंः क्व गत्र २ जं धुं हं रुठ स्वाहा॥

॥ जडो ॥
वा रा ही

५

ॐ वाग्राही त्रकास्य ह म व द नाः ॥ ॐ क मूर्खाणि नृणां चतुर्हजाः ॥ मूलर
जाणां विन्दुपात्रं च ॥ ॐ यत्र रजाणां स्वप्नं कुरुते ॥ ॐ अत्र भीमही भवा हवी ॥
॥ • ॥ **स्वरायस्वरा** ॥ • ॥ **स्वानवाय** ॥ ॐ रुं रुं ठ वाग्राही नमः स्वाहा ॥ ॐ कपा
ल लेल वाय नमः स्वाहा ॥ ॐ बीजय च ॐ नमः स्वाहा ॥ ॐ यमदं व ग य नमः
॥ स्वाहा ॥ ॐ कृतिक नागना जाय नमः स्वाहा ॥ ॐ ॐ काम्य त्रु ग य नमः
स्वाहा ॥ ॐ मोन नाथ य नमः स्वाहा ॥ ॐ वृग वृजाय नमः स्वाहा ॥ ॐ ग कः
त्रयमथ नाय नमः स्वाहा ॥ • ॥ **पूजा लोका रुमि** ॥ • ॥ **स्वरा** ॥ ॐ वाग्रा

ल उं जिह्वा स्थावरी रु स यथा स्वाहा अयथा मयी जायते

[illegible]

ॐ ह्रीं क्लीं उमसि दादइगुवा जायपति बालसा ॐ शिष्य

॥ स्वयं क॥
कृ पाकृत॥

५। ५५

नमः संनिता वत हस्त धरा दवी ०० डायलीन मस्तुगे ॥ ॥ ~~वा~~ उं ऊ व
स्म अने लीला दवी सहिता यः पुलिप य ०० द म्ब लि ग कर हं रु ठ स्वा हा ॥ ॥
~~वायू~~ क न ॥ ॥ उं वा पु च म्म क लि व वं स्व अ रु ठां क वि न्द्र कं वा मु मु वा ह या
द वि क्षा न पु ष्ये न मा स्तु गे ॥ ॥ ~~म~~ वा न ॥ ॥ उं डी अं हं ह ० द वी का ठ वि घृ ना
अ य हं रु ठ ॥ ॥ ~~प~~ ॥ ॥ उं य चा मु मु कं का न नृ पं अ व न न र अ धुं हं रु ठ स्वा
हा ॥ ॥ ~~वा~~ न ॥ ॥ उं वा मु मु न क व क्षि क वां गी प्रे गा स नी पिं गा ऊ कं जी न क
व का च उ र्जि ता मूल उ जा लां वि न्द्र पा उं व अ प न र जा लां क लि क पा ल मृ गं

पदमास आलापति हल नला मथमवा उहासी निल

प्रदमास आलापति हल उला मधमवा उहासी निल

वा॥ • ॥ **स्वरावहृदा** ॥ • ॥ **स्वानवाय** ॥ उं हं रुं चाम् काय नमः स्वाहा ॥ उं संहाल
वाय नमः स्वाहा ॥ उं हं का लेच उं नमः स्वाहा ॥ उं वा युव्यय नमः स्वाहा ॥ उं दवी
का ठ न कु गाय नमः स्वाहा ॥ उं उं रुं मय नमः स्वाहा ॥ उं वा ल सु कि ना ग
गा जाय नमः स्वाहा ॥ उं सिद्धि नाथ य नमः स्वाहा ॥ उं कि लि कि रा स म ना
य नमः स्वाहा ॥ • ॥ **पूजा ला स्या रुति** ॥ • ॥ **का** ॥ उं चाम् पु ग मा नू टाः
कलिक पात्र क्षत्र दीः कुं वां गी कू न नू पी च चाम् पु य नमो रुते ॥ • ॥
वालि ॥ उं वा युव्य चाम् पु कं का ले नू प ध त्री द वी पु लि प रू द म्य लि गू रू

ॐ ॐ मा रू ग मा ष मा न्सा दि रु ल मय प क्कान य रा सर्वा प क ज न स हि ना य
ॐ वै पू जा संप दा ष या म्य हं ग रु ल प ज म्य ष्व ल ॥

॥ डाचके कुजा ॥ ५१॥ लक्ष्मी ॥ २

हंरुट स्वाहा ॥ • ॥ ~~ॐ नमो भगवते~~ ॥ ~~उ विन्दुं नमो भगवते~~ ॥
~~उ विन्दुं नमो भगवते~~ ॥ ~~उ विन्दुं नमो भगवते~~ ॥ ~~उ विन्दुं नमो भगवते~~ ॥
सुग ॥ • ॥ ~~मयया~~ ॥ उं डो गं हं हं वल्लिका वाहय दवी ~~ध्यान~~ नमः
उं गं महा लक्ष्मी श्रुत लोके अ वन त २ गं गुरुं रुट स्वाहा ॥ • ॥ ~~ध्यान~~ ॥ उं मो
हा लक्ष्मी प्रमवर्द्धी प्रक मूखा च उ रं जाः पुन ग्रा सिंह वाहनी मूल रजा र्वा वि
न्दु पाठं च अ पत्र रजा र्वा स्व भक्त क धन तनी ॥ • ॥ ~~स्वरावस्था~~ ॥ • ॥ ~~स्वा~~
~~नवाय~~ ॥ उं रुं रुट वल्लिका यन मः स्वाहा ॥ उं ली वन हं ल वा यन मः स्वाहा ॥ उं

ॐ ॐ माद ग्ध मा स ज क म ध प कान हल मूल सुक म्पल स वा पु क ज ल स
हि ना य ॐ द प्जा स प्छा ष्ट्या म्प हं गुरु त्व प ल म्प ल ॥

ॐ उपी वा श्रुत मय मय माय ॥ गान्धी हामी ५२

इत्थं वा स्यात् सुकमल स्यात् पात्नीजास्वी रुजा
हं ऋग्वेदे नमः स्वाहा ॥ उं ॐ अत्राय नमः स्वाहा ॥ उं वलिनकुत्राय नमः स्वा
हा ॥ उं वठकवृत्राय नमः स्वाहा ॥ उं गठक नागत्राय नमः स्वाहा ॥ उं मः
हा पत्र नागत्राय नमः स्वाहा ॥ उं ऋदहासमम नाय नमः स्वाहा ॥ • ॥
पूजा लास्या सुति ॥ • ॥ एता ॥ उं महा लक्ष्मी सिंह मातृता कया लख प्रक्षी गोति
ति न्यत्रा सोम्य तृपीचः महा लक्ष्मी नमो सुग ॥ • ॥ **वलि ॥** उं ॐ अत्र च विदुदवी
क्रमवक्ष्यः ॐ दमलि गृह २ स्व स्व स्वाहि २ सर्व सु तादि अन्तिके कृत् १ पूर्णिकृत्
उं ऋ १ हं रुठ स्वाहा ॥ • ॥ **पुनर्वलि विधय धन ॥ • ॥ धन गदा सः कृमा लः म**

ॐ कालयूजा ॥ स्वरावसूजा ॥ • ॥ **स्वानवाय** ॥ ॐ गंगलयगयसाहा ॥ ॐ गलधिय
नयसाहा ॥ ॐ गलज्जनायसाहा ॥ ॐ गलपतिपूजिगायसाहा ॥ • ॥ ॐ स्कंध
यसाहा ॥ ॐ कुमात्रायसाहा ॥ ॐ गकिधनायसाहा ॥ ॐ मयूत्रबाहनायसाहा ॥
ॐ मंसाहाकालीयसाहा ॥ ॐ कलालीयसाहा ॥ ॐ कंकालीयसाहा ॥ • ॥ **पूजा**
स्यास्तुति ॥ • ॥ ॐ गलपतिज्वहलमविधिनाजायनायकः सर्वविधिहरेन्द
वगजवकुंनमास्तुतः ॥ • ॥ कुमात्रं पत्रमंदवः मयूत्रापरिसंस्तिगः नित्यकु
मात्रस्वगूयायः कुमात्रं पुनमास्तुतः ॥ • ॥ ॐ ध्रुमांघ्रात्रं तयं सापि विरहाकुपि

लक्ष्मीकृष्णमादधै गवात्रुः महाकालं नमाम्यहं ॥ • ॥ वलि ॥ • ॥ धनं ॥
 कथात्रयुजा ॥ • ॥ स्वर्गसुखा ॥ • ॥ ह्यनवाय ॥ उं ह्रीं नमो पीतवर्णस्य त्रेतावतः
 बाहनाय नमः स्वाहा ॥ उं ह्रीं नमो यत्र कवर्णस्य गजिहस्ताय नमः स्वाहा ॥ उं ह्रीं
 नमो धर्मराजाय महाबाहनाय नमः स्वाहा ॥ उं ह्रीं नमो यत्राकसाक्षिपतय कृ
 ष्णवर्णस्य पुतात्रुताय नमः स्वाहा ॥ उं ह्रीं नमो मायां वतुलस्य गिगवर्णस्य सक
 बाहनाय नमः स्वाहा ॥ उं ह्रीं नमो यवनाधिपतय हस्तिगवर्णस्य पठाकहस्ता
 य नमः स्वाहा ॥ उं ह्रीं नमो वलाय पीतवर्णस्य दंष्ट्रहस्ताय नमः स्वाहा ॥ उं ह्रीं नमो

नायजितवस्त्रियः प्रिञ्जलहस्तकायवृक्षासनायनमः स्वाहा ॥ • ॥ दशकाठ
 यागः स्वा नवाय ॥ उं यन्माककायनमः स्वाहा ॥ उं प्रह्नुककायनमः स्वाहा ॥
 उं पद्माककायनमः स्वाहा ॥ उं विद्याककायनमः स्वाहा ॥ उं ऊर्ध्वत्रायनमः स्वा
 हा ॥ उं गङ्गिकाकायनमः स्वाहा ॥ उं नीलदभुयनमः स्वाहा ॥ उं महावलायन
 मः स्वाहा ॥ उं उक्तिवचकायनमः स्वाहा ॥ उं ह्रस्वकाकायनमः स्वाहा ॥ • ॥
 पूजा लास्यास्तुति ॥ • ॥ ह्रीं ॥ उं ह्रीं उ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 मा प्रणम्य विपण्ड्यैः नैऋत्ये रात्रे सावित्रेः नागाधिपे वसुधैः नमः ॥
 कर्पूरपुष्प

नाथिवरुधः कृष्णराजकाशिवरुधेवः ॥ ॐ अन्नाधिपं नमोस्तुते ॥ • ॥
उंसाध्याह्निकदलुकवद्वृक्षः जीगाहत्रपावकः कयादीयवनात्रविजस
धत्रावृक्षसुगार्हत्रिः ७ तावैदग्धिगिसहगः ॥ इष्टाचमात्रादयः क्रीडा
सत्यप्रकीर्तयन्ति सर्वजगताः विद्याप्रभुः ॥ • ॥ उंयमाक्रीमहावि
त्रं प्रज्ञायथाविद्याचलागर्हिनाजं क्रीडात्रयः नीलदलुमहावीरः उफिरवस
कृनाजं कुदजक्रीटं नमोस्तुते ॥ • ॥ धनदिगवलिविय ॥ • ॥ स्वांसमय
विं कं अलिस्वांसमरु ॥ वलिविय ॥ • ॥ उं ५० राक्षसहाताजाः लोकपा

[illegible]

ॐ हं रुठ स्वाहा ॥ ४ ॥ उं विद्या नकुत्स हा कोरु महावलपता कुम ४ ॐ दं व
लिं गुरु २ रव रव स्वाहि २ गि ४ २ व ४ २ हुन २ गुरु २ सर्व विद्या नकुत्स दं २ रं दं २
गुरु २ दह २ पच २ मध २ उं ४ ॥ विद्या नकुत्स गुरु २ रुठ स्वाहा ॥ **विद्या नकुत्स वलि ॥**
॥ ५ ॥ **उं महा काल वलि ॥** उं नम ४ श्री महा कात्राय सा स नो य कात्रि ॥ य
दि प्रहा स मत्र सि काः कालि कला लि वे गालि च ४ ॥ लि सिद्धि या गि नी ४ ॐ
दं वलि ४ गुरु २ जी ह ४ हं रुठ स्वाहा ॥ ६ ॥ **वन्दु महा गो व न वलि ॥** उं नम
ह ग व ग वन्दु महा गो व न यः दे वा सू त न त सं ग्रा स न क रा यः स क त मा जः

[illegible]

नदक्राय चउ कानिमसिप्रराय खअ प्रलक वग्रहसाय मंश्वानीवत्र
पुदाय मंश्वद्विसिद्धिदाय ॐ देवलिपुष्पा धूपंदीपं मांसकं तादिसहि नं
नृकृत्स्नस्वस्वाहिर मम अकिंकृत् प्रष्टिकृत् त्रकावत्र नृष्टिकृत् ॐ ॥ १८
धीः हं रुठ स्वाहा ॥ ६ ॥ **मय्येव च निता तासाधनवति ॥** ॐ नमो एत गवति नृकृ
वं च निता तः का ता काल हत्र सर्वदा त्रिउ ३४ स्वलय हत्र अक महादा त्रुलिः
लय एः स्व अउ न पा इ का रु उ घदि सिद्धि दद ॐ देव लि पं चा नृ तादिसहि
न नृ कृत् ॐ ॥ १९ ॥ **इति ता तावति ॥** ॐ ता त लि सर्व

३४ खल्यहत्रसि चतुर्मात्रमिन्द्रात्रिसि सर्वदवा सत्र गन्धर्वकिन्नर महात्र
गाउपडुवप्रमर्द्धसि एतपुनपि मच यत्रात्रात्र स जाकजकि न्यादि हय
विधंसि सिपत्र कुयनमनुप्रयागविना जनि एतवमि दुर्गा त्रात्रिसि अ
गक २ मं वजिं गृह्ण २ मम सर्वशत्रु न ह न २ स्वाहि २ सर्ववैश्वनं वाधिगुहा
नृदह २ कंदय २ दय २ माठय २ स्फाठय २ सर्वसिद्धिप्रयक जमकिन्नर जा
कृत् सर्वसत्त्वानव श्वं कृत् सर्वकत्रिकलहविग्रह विवा दविद्या दयापिक
त्रान् किन्नर रिन्द २ एंजय २ औरय २ स्फुं मय २ औं २ हं २ उं २ आ १ हं २ हं २ स्वाहा

३

॥ ११ ॥ महाजिगात्रावलि ॥ उं महा अथ ग्रंथं की उं दं वलिं जे लोक संसात्रयः
दात्रिश्च गज विदात्र अथ सर्व इह प्रदुष्कान्तरं जय रज्जुगुरु रज्जुगवणिः ममः
निधंद हि ददापय हं रुद्र साहा ॥ १२ ॥ **॥ महा अथ ग्रंथं महाजिगात्रावलि ॥** उं
रज्जुगवणिः महा अथ ग्रंथं महाजिगात्रावलिः अथि पुष्टि वं कात्रिणिः पत्रमनुजं च विष
पुष्टि विना जिनिः महा अथ ग्रंथं मम सर्व सत्त्वा नां च त्रिं कां कृत् ॥ महा दा
त्रिं अथ ग्रंथं ॥ कात्रय रदिव्य त्रिपिनी सोम्य मुरिः ॥ दं वलिं गुरु रज्जुगवणिः
हि रसाहा ॥ १३ ॥ **॥ पुस्तकं महाजिगात्रावलि ॥** उं पुस्तकं महा अथ ग्रंथं महाजिगात्रावलिः

[illegible]

सिद्धिचक्रवर्जयासिनाहापयमित्याहा ॥ १६ ॥ **धंजंगकयुत्रिवलि** ॥ उं न मा
हगवगधंजागुकेयुत्रजय२विजय२विजयकाहनि. ममसर्वजगुंज म
य२सुमय२ममसर्वजगुंजुमथ२गुस२त्रकायय२पुत्रय२काजममहग
वगि. महावजगा. **अत्रिसिद्धि**. त्रु२मां हगवगि. मं वलिं ग. रु२उंज२य
नसेन्यविधं सय२मममगुं वृ२ विलि२रि२त्रि२उ२रु२कल२किलि२ः
क२२सर्वगधगगावलोकिगस्याहा ॥ उमनाउपरासस्याहा ॥ वडाकृविमन
स्याहा ॥ सवत्रउवसीकनलस्याहा ॥ त्रु२गधगगल२स्याहा ॥ १७ ॥ **उह्यवि**

जयावलि ॥ ॐ नमो रगवमिउ वी वविउ य मृत्तं उ य मममृत्तं ना गय २ विना
अय २ ०० दम्य लिं गृह २ दी र्घा युक्कं म कृत् २ रूं २ अ नि म कृत् २ स्य सि स्था हा ॥

५ ॥ १८ ॥ **गृहमातृकावली** ॥ ॐ नमो रगवमि गृहमातृका य सर्व न कुप्र रय ना
जिनिः सर्व दय ना गय कादि रय यूप अ म लि त्रा उ चो त्रादि रय वि धं स लि गृह
मातृकः सर्व न कुप्र दि रि ४ आ शुं जा ग कृ २ ०० दं व लि गृह २ म म सर्व वि द्या न ह
न २ अ निं पू षिं व म कृत् २ रूं २ रु ठ स्था हा ॥ १९ ॥ **पुण्यं गितावलि** ॥ ॐ नमो र
गवगे म हा पु ण्यं गिता य सर्व सूर्य अ नि क न ष्ठ जि मि या उ न ग ग स ह पु क न

ॐ दं वलिं पूषं चूं पंदी पंगु हं २ जनकं नचि त्समकुंगं मनु गनु उनु विषवृक्षं
गपु या गादिकं कृगं कातिगं गत्सर्वं हन २ दह २ पच २ मथ २ गज २ गज २ गत्सर्वं
मकुं निपतनु स्वाहा ॥ २० ॥ **पंचत्रकावलि ॥** ॐ महासाहसप्रमदनिः शिः
याताहि सर्वगं निवात्रनिः मम सर्वसत्त्वानां ॥ ॐ आर्यमहासायुत्रिः महावि
याताहि सर्वविषप्रसमनिः मम सर्वसत्त्वानां च ॥ ॐ आर्यमहाशीगवणिः सर्वदुः
प्रमदनिः मम सर्वसत्त्वानां च ॥ ॐ आर्यमहापुनिसत्रमहाविद्याताहिः सर्ववि
याधिपतयः ॐ आर्यमहासक्तानुसात्रिनिः सर्वशुद्धदवनाशनिः ॐ दं वं

लिं ग २ म म सर्व सत्त्वा नां च ॥ अ षि कृ त् ॥ पू षि कृ त् ॥ व षं कृ त् ॥ सर्व इ क सत्त्वा न्
मा त्र य २ जी ह ३ हं रु ठ स्या हा ॥ २१ ॥ **सा र्थ क वि क व लि ॥** उं उ मा या द व गा ३ स
र्व षं डा या लो क ना य का ३ ना ग म ग न्ध र्व य का ष च ॥ १ ॥ य नु व लि ना स दा ॥ उं ष
का त्रा मूर् खं सर्व ध र्मा य नू त न ला ॥ उं षा ३ हं रु ठ स्या हा ॥ २२ ॥ **सि षि क वी त्र**
व लि ॥ उं सि षि क वी त्रा य वी त्र ण य ॥ कृ त् ण य ज ल ह द या य ॥ नी त्रा त्प ल ह द
स्या य ॥ ३ ॥ द व लिं ग ही त्या य उं ष ॥ म म सर्व सत्त्वा नां च ॥ अ षि कृ त् ॥ पू षि कृ त् ॥ स
र्व सि षि कृ त् ॥ हं रु ठ स्या हा ॥ २३ ॥ **अ कृ त व लि ॥** उं न मा त्र त्र य य ॥ न मा मा

उं ष

लि एडा यः यकु स्य नाधि पग यः उं उ ह्मि मज कुल जले नुः ॐ दं वलिं गुरु र एवर
रवा हि २ महा बलं स देहि ददा पय स्वाहा ॥ २४ ॥ **पि अम च प गू स व त्रि व लि ॥**
उं पि अची प र्दु ग व लि ॥ सर्वा प दु व ना ग निः सर्व प्रा गः पु ष म निः सर्व ते य र
वि ना ग नीः ॐ दं वलिं गुरु र एवर रवा हि २ सर्व इ ष मा त्र य र गुरु र व न्ध र ह
न २ द ह २ प च र मा त्र य र हं रु ठ स्वा हा ॥ २५ ॥ **सा र्व लो गि क व लि ॥** उं त्रे न्दा उ
व की स ह र ग सं धेः त्रि सं च गुरु र नु व लिं वि जि षं ॥ अग्नि य मा नं जृ त्रि मि रः
प मि उ च ॥ आ पां प मि वा शु ध ना धि प उ च ॥ ॐ गी म न र ग ना धि प मि उ च द वाः उ र्ज

२

कैवडाकपिनामह उवदयाः समस्त सुविषयनागा धनाधनाशु कगलेः सम
ताः पुमिपुमिपुमि कविद नच स्वक स्वक उवेवदि जम सुसताः गुरुकुशुकाः स
वलाः ससेन्याः सपुगमिद स्वडनेः समता पूष्यवलि धूपनिवद नच गुरुः
कु रजकुपिवकु वेदमिदेचक म् सुरुलेश वकु हं रुठ स्वाहा ॥ २६ ॥ अह
महि ॥ ~~उं नमः स सममकु~~ ~~नागवलि~~ ॥ उं नमः स सममकु
कायवाकविगुपः ॥ अ न नुवा सुकिगकु क क क गिक वममहापम जंरपात्र क
लिक उयविक यादिया न्यया महा नागताजा एः सपही कएः सपत्रिवात्रे

ॐ दंमर्षपाद्याचमनीयं पुष्पं धूपं दीपं बलिं च दास्यामि संप्रित्या गुरुकु डिः
 पुत्रु उकुतु हत्या रत्या मम सर्व सत्यानां च युवर्षयलमां ग्राग्वे जमनि पूष्टि
 मृतिं प्रीतिं च दादध्वं सर्वदा हं रुठ वज्र धरा ज्ञा ह्यपयमि स्यात् ॥ २७ ॥
 दिग्भालवलि ॥ ॐ ज्ञा ३ उचमव गुरु कव्यत्र ३ जम न्याग्नि ने ज्ञाप वा युवा येमवि
 वलि पुद्गादवेताचना ४ सपत्नीका ४ सपत्रियाता ४ सर्वदीदीदवग ४ सावाया ४ सु
 पत्रियाता ४ चडा कृपितामहादित्य ४ सपत्नीक ४ सपत्रियात्र ४ ॐ दंमर्ष
 पाद्याचमनीयं पुष्पं धूपं दीपं गन्धं नेवद्यं बलिं च दास्यामि संप्रित्या गुरु

८

कं कुडि व कु उ उ कु त्या द कु पि व कु ह का र त्या म म सर्व स त्या नां च यु र्व ल व र्
मा त्रा ग्धं अ किं पू षिं धु गिं प्री मिं च द द धं सर्व दा हं र रु ठ व ज ध त षा ग्ध प य मि
स्या हा ॥ २८ ॥ **गु ह व लि** ॥ उं ज्हा हं ता हू का ला मि च उ र् य मं ग ल वू ष वृ ह
त्य मि कु उ ग नि ज्व ल क उ ए स प नी के ए स प त्रि वा त ए ४ रु दं म र्च या आ
व म नी यं पू षां धू पं दी पं व लिं च दा स्या मि सं प्री त्या ग कं कु डि पु कु उ उ कु त्या
द कु पी व कु ह का र त्या दा न प ग ४ सर्व स त्या नां च यु र्व ल व र् मा त्रा ग्धं अ किं पू
षिं धु गिं प्री मि च द द धं सर्व दा हं र रु ठ व ज ध त षा ग्ध प य मि स्या हा ॥ २९ ॥

दण्डाटवलि॥ उंका ४ हं हा यमा न क प्रहा न क यमा न क विहा न क ठ कि ता
ज नीलदलु महावल ऊबल सुक ताज उ। श्री वल दण्डाटव सप्रहासः
प त्रिवात्र ल ० दं मर्घ पाशा य मनीयं पूषं धूपं दीपं गन्धं नैव घं वलिं
वा उ उंददा महं गवाग ल संप्री लार हनु जिपु नु र्याद नु पिव नु हृष्टा स
ला मम सय त्रिवात्र स्या पूर्व लव र्क्ष मात्रा गंधं अन्नि पूष्टिं धूमिं प्रीतिं च ददधं
सर्वदा हं २४ वज्र धना ज्ञा ज्ञाय यमि स्यात् ॥ ३० ॥ **सर्वदण्डवलि॥** उंका
४ वेगालि विक्क गामूख उलूक मूख सुक मूख जाक मूख पुक न मूख ग

धर्मस्यः याद्युर्मस्यः गत्रुर्मस्यः सपत्नीकृत्यः सपत्निवात्रस्यः ऋदं सर्व
 पायाचमनीयं पूषंधूपदीपवलिचदास्यामिः पुण्याः गुरुकुं उद्युक्तुः पिवक्तु
 ह्युत्थाः ममसर्वसत्यानां च युवर्षवत्तमात्राद्यं जमनि पूषिं धर्मिणीमिव
 ददधसर्वसदाहं रुरुठवजधराणां ह्यपयमि स्वाहा॥ उं य केचिदिहस्तान्ये
 दवदानवगणः गन्धर्वराक्षसः महात्रगः मनुष्याः मनुष्याः पुनापि जमचः ॥ ७ ॥
 कजाकिनीमारुग्रहः पस्मात्रकाः सर्वहृगगणः स्तावत्तुंगमाज्वः न
 सर्वः ऋदं वलिं गुरुकुं ममसपत्निवात्रस्यः सर्वसत्यानां च जमनि पूषिं त्रजाः

५

वत्रलुपिं कुरुवन्तु उज्ज्वा ४ हं रुठ स्याहा ॥ ३१ ॥ **सायाजिकाना सर्वलोम**
कवलि ॥ उज्ज्वा ४ दण्डादिग्यवक्तिगण्य ४ नय ॥ वजायूध ॥ वज्रकाल ॥ नाग
वज्र ॥ वज्रहेलक ॥ वज्रानल ॥ वज्रमुखल ॥ वज्रानिल ॥ काठवज्र ॥ मीलवज्र ॥ पृ
थिवीदवतागल ॥ सपत्रीक ॥ सपत्रियात्र ॥ ४ ॥ नय ॥ दव ॥ नागयज्र
गन्धर्वसुत्रग ॥ ७ ॥ किन्नरमहात्रग ॥ १० ॥ पिण्डसोलादाप ॥ सात्रठा ॥ सात्रका
द ॥ लावलि ॥ वदाप ॥ यामि ॥ ७ ॥ द ॥ पू ॥ धूप ॥ दीप ॥ गन्ध ॥ नय ॥ द्यादि ॥ संयूक ॥ गृहीत्वा
सोमनस्य ॥ ला ॥ रि ॥ ना ॥ व ॥ रु ॥ स्तान ॥ च ॥ नि ॥ रू ॥ प ॥ ड ॥ वं ॥ क ॥ व ॥ न्तु ॥ सर्वदा ॥ चि ॥ स्तान ॥ न ॥ ४

ॐ ज्ञा ४ हं ॐ दं म मृ ग पि ॥ ॐ क्काम म सर्व सत्यानां ॐ कि क्व च सु स्वस्ति स्वाहा
॥ ३२ ॥ **ॐ प्रवा ग वलि** ॥ ॐ ज्ञा ४ हं हा ४ ॐ हा वलि ग त्या हि ॐ प्रवा ले लो ३ न्य
त्या ३ पि ॐ दं वलिं गृ हं पू षं धू पं चा ॐ गं द दाम हं ग वा ग त्य स प त्रि वा ता जा व द
ला गृ पिं कृ त्र व तु हं २ व ज ध त्र का ह्या प य गि हं रु ठ स्वा हा ॥ ३३ ॥ **पु ग व लि**
॥ ॐ म म ४ स त्र पा य ग थ ग ग या हं क सं म्प क्क वृ द्वा य ग य थं ॥ ॐ मू त्र २ प्र सु
त्र २ ग त्र २ स कृ त्र २ सं क र्ष य २ स र्व प्र ग नां स्वा हा ॥ ॐ ॐ प स त्र तु र व ना त्र प्र
त्रि ह्म द दाम्य हं सर्व लोक ध्म उ नि वा जि नां पु ग ना ना हा त्र मि मि ॥ ३४ ॥

[illegible]

[illegible]

क
२

त्रिल सर्वपकत्रमसहिगायः षगमिदावजमन्त्रं उं ञ् ४ हं रु ठ स्वा हा ॥
॥ ३७ ॥ उं य मा न्क का य स म ही व ल्म यः क्रो ४ ङो ४ वि रु गान ना यः नो गा
र त ल्म यः गे ला क वि म र्द न ह स्ता यः सर्व मा ल व ल यि ना ग ना यः ॐ द व
लिं ग रु २ म म सर्व वि धा न ह न २ व उ मा गान् नि वा त य २ हं २ रु ठ स्वा हा
॥ ३८ ॥ क ल्म रु ला व लि ॥ उं ञ् ४ हं क्रो ४ कू रू कू ल सर्व सत्य व स्ये क तिः स
र्व र य र यं क तिः ॐ द व लिं पू ष्यं धू पं दी पं चा क्र गं द दा म्य हं सर्व द व ना ग
य क्र ग श्व री सू त ग रू उ कि त्र तः म हा त गा द याः यथे व यथे कं उं उं अ ध पि

वधः स्वादयः जिह्वंथमममनः सिद्धिप्रयच्छुधः उंज्झाः डीः हंरुठ स्वाहा ॥ ३८ ॥
॥ ३८ ॥ उंभुक्कहिभुक्कजठनमोपनीगानां गभकिं कृत्तुपुष्टिं कृत्तुः महाये
जाविपनयः ७० दंवलिंगरु २ गृजापय २ पत्रविश्यामा कर्षय २ युग २ कुंद २
हृद २ उंज्झाः हंरुठ स्वाहा ॥ उगुगाराभुक्कजठनवलि ॥ ३९ ॥ उंभुक्कहिभुक्क
उफत्रवलि ॥ उंवर्ज्यामिनीडीः ७३ स्वरुं २ ७२ मममनः सिद्धिप्रयच्छुधः वलिंरु
रु २ हंरुठ स्वाहा ॥ ४० ॥ उंभुक्कहिभुक्कजठनवलि ॥ उंसर्वगधगगसमयमनुस्मन
हंरुठ स्वाहा ॥ ४१ ॥ उंभुक्कहिभुक्कजठनवलि ॥ उंनमारुगवलेत्रकनेग्रायेः महा

चतुर्विंशपाद्यः समस्तैर्गणैः सर्वगानि संकाशय २ तंजय २ माठय २ तगव
गिवज्जगत्सर्वं त्रैलोक्यं साक्षात्काठय २ चक्रवर्ध २ जित्रावर्ध २ सर्वगानि वन्द
गालय २ मात्रय २ पूष्य २ धूपं दीपं बलिं गुह्यं हंरुठ स्वाहा ॥ ४ २ ॥ ठंठ गिः
दत्तपुत्रात्रमात्रिकासमाह ॥ ० ॥ धनं यथापहात्रपूजा ॥ समयकायः
थमगविय ॥ यथास्मिन्पादि ४ ॥ धनं दत्तुं त्रिदिविय ॥ ० ॥ धनवृषि
पूजा ॥ उं संहात्रद्वीरुतात्रक एवजसि च्चत्रं पुनिकु स्वाहा ॥ पूष्य स्वाहा ॥
यथास्मिन्पादि ४ ॥ जेसायन ॥ दत्ति ॥ ० ॥ बाहो न पूजायाय ॥ उं गुन्यमय

2676

RESEARCH

10

1111

स्थायि॥

जगत्सर्वं शुभं नाकत्रुत्तम एव हि त्वा इति एतदुक्तं सुखायति न वा प्रयातु ॥ • ॥

उं ड्रीं ड्रीं का गा य ड्रीं ड्रीं हं रुं रुं हं ह्या हा ॥ • ॥ ग यं ह्या ॥ का कृतं का यं ॥ • ॥ का

गहायक ॥ सुवाहू गा धम पत्रया ॥ धम रा वा ल व हा य ॥ हं न मः श्रवजसत्या

य ३ । दया ४ सुता सर्वरुं गं ग सि छा ४ ग का स पू स्ति ४ क ग पुं ठ ना व ग ध व

ष का ४ गु ह जा ग य व य क वि र मो नि व स कि दि द्या ४ ॥ १ ॥ न्यस्तक जानू

४ पृथिवी सु ते हं कृ गी ज लि वि हू य या मि ना स्तु दे हा । स पू ग दा ते सह रण

स ध्ये ॥ सुत्वा ० हा या ॥ नू ग हा र्थ ॥ २ ॥ य म नू पृ ह नि व स कि दे वा ४

येनन्दत्रयसूत्रात्रयव. यथादशास्तत्रविमलुत्रय. नगत्र सर्वषूचयव
सन्नि॥ ३ ॥ **गतीत्रसूत्रसर्वषूचसंगमषूत्र** त्रात्रयाचापिकृणाचिवा
सा. योपिगणत्रयव. पत्रत्रय. कृषयुदीयषूचमहानदिषू॥ ४ ॥ **यः**
गामधायषूचकाननषू. गुन्यात्रयदवगृहषूच. विहात्रयेसावसथ
समषूचमथषूसात्रासूचकंडात्रायां॥ ५ ॥ **यगतरात्राचि** त्रुगृहव
सन्नित्रयसूत्रयषूचत्रययवेकवृडाषूचमहापथषूचमहात्मजम
षूचमहायमषू॥ ६ ॥ **सिंहषूच** अक्षुषिगषूचयव. यसन्निधात्राजव

महागविषु दीपवृद्धिपू. कुगात्रयवमत्रोस्मन्मन्त्रेषु॥ वसुनि यव १॥
॥ १ ॥ **हृषीकेश** गन्धर्वमात्म्या धूपं बलि दीपं बलिविचित्रं च **रक्षा**
गुरुकुंभुगुरुकुंभी वनुचदं ० दं च कर्मसकलं गुरु॥ ८ ॥ **श्री** उव
जीतसुदवसंघे. त्रिमं बलि गुरु विचित्रं च **रक्षा**. **श्री** नये **ज** य स ह पणि उव
आपं पणि वायू धना. धिपण्व॥ ६ ॥ **श्री** **गान्धर्व** पणि उव दवा. स
उद्धिचं **आर्क** पितामह उव. दवा संमगा. हवि यव नागा. धना धना गु कग
सहस्रमगा॥ १० ॥ **पणि** **पणि** **ह** कनि व दयं पितृ कस्य का वदि गम च **र** गे

गुरु उवाच तव तास जे न्याः जमनि च पूष्टि च कुर्वन्तु नियं ॥ ११ ॥ **पूषं**
वलिः पूषं वलिः नेव यदा नाशियमिह वेव मना तथस्य उक्तं तु पीवन्तुः
जीघ्रन्तु च दंष्ट्रं दंष्ट्रं कर्मसंस्तुतं गन्तु ॥ १२ ॥ **चक्रवर्तुस्य** जमनः
वाः पर्वण्यं दंष्ट्रं गुरुः ग्रामया उर्वयः धनुः पुन्या गात्रविशेषतः राजन
स्तुतं गगनं न्याः सागुंगादि विजयतः ॥ १३ ॥ **कुसुमं त्रुडमहा त्रुडः** दवद
उससाहि १४ कुसुमं लाली रत्नं नंदादिमिथि नायक ४ चा मूषि द्याः
मिनीति रत्नं उमा दवी उसं रत्नं ॥ १४ ॥ **ऊया गवविज** या उर्वयः

श्रुतिगणपराजिताः। एतकात्रिमहाकालिः। सुलकालिउयागिनिः००
त्रिचन्द्रिद्योत्रीइष्टितं वकिप्रददयत्री॥ १५ ॥ कांवाजिनीपिवा
पिन्याःगामावाहिगयोगिनीः। दालतूपासहातूपाः। उक्तूपाकपालिनी
कपालमात्मालिन्नाः। स्वहांगायसहृदिकाः॥ १६ ॥ द्युभ्रह्मा
अह्लाः। वज्रह्लाधनूरुधः। पंचजकिनिमहागलः। सर्वधम्मिन्साध
क०॥ १७ ॥ योगमभुलंमहात्राजिः। वज्रयत्रीपुत्रुधः। गधगर्गम
हाकायः। नीलंजनंउग्रुष्टिका॥ १८ ॥ दंयजंयत्रीकाहाकावाह

नवि। गषठः उँ क क क न २ व व व न २ र र र र द न २ म म स र्व इ का
 न। व घ घा ठ य २ ज ज मा न स्यः आ यू आ ग्रा म् का म नार्थः य गी ग म स्त्री क
 रु ल सं प्रा फि का मार्थः महा बलि पूजा सं पूः सि नि मि त्य र्थः ग म किं क रू प्रु डि
 कू रू व ज ध त आ हा व म गि हं हं हं रु ठ रु ठ रु ठ रु ठ स्या हा ॥ • ॥ का ता व
 लि स हा क पू य ॥ • ॥ ध नः ज ह या ना भ स ह ल सा ॥ • ॥ हा पु नि
 या य ॥ ज ह म या सा ॥ वा क ल पू जा को य ॥ म हा दि ग ब लि वि या ॥ • ॥
 क म न्य ॥ हा ग ॥ उँ न म ४ श्री च लु का य ॥ उँ उँ उँ उँ ग व न्दः व च कि त च कि तः

पा वि द्य प रू ष म ग क्ता य कः पा धं

ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ सदावीरं चक्रमध्वरुसंस्तिगं ॥ नानाहसन
समूहगं चक्रनाथयगनमः ॥ ॐ सर्वलोकसकंदत्यागिनिज्ञातनायकं ॥
श्री गणेशं नमः ॥ सर्वसत्त्वसुखयग ॥ १ ॥ ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ ॐ ॐ ॐ
उगुचक्रं चक्राकेन चक्रिगं चक्राङ्गं श्री गणेशं ॥ हूं हूं हूं कालरूपं प्रहजितवदः
नारवर्द्धया जघनकं ॥ ॐ ॐ ॐ दधुपाणिः ॥ उमत्रुतिमितिमाः ॥ ॐ उमानानरुक्तं
ॐ ॐ ॐ श्री गणेशं यगुविजयगसिद्धिवन्दनमेक ॥ १ ॥ ॐ ॐ ॐ धात्रं
पं धूलिगधूलिगः धर्षणीनादधाषं ॥ ॐ ॐ ॐ सत्पुं प्रहवनधर्षितां

उचनउउपात्रं: अं अं अं रतनाथं सकलज नदिगं. गत्यदहपि अयः हं हं हं
कात्रनाद. सकलरयहं. सिद्धि वड नमस् ॥ २ ॥ **वं वं वं व्या म धात्र**
उमणिपुवनगा. सकल पात्रगात्रं: कं कं कं कात्रत्रयं. धकणिध कणिगं ॥
ग. स्यहसुणि गूत्रं: इं इं इं इं गत्रपे. उमणिचचत्रिगं. गत्यदेवस्यत्रयं
सं सं सं मनु सिद्धि. सकलरयहं. सिद्धि वड नमस् ॥ ३ ॥ **उं उं उं:**
कालत्रयं. उ मणि उ म उ मा उ यमा ना उ मला: कं कं कं कात्रधनि. धू
धूत्रिग धूत्रिगं: धूं धूं धूं धूं मवत्स. उमणिपुवनगा:

मैः चूर्चूर्चूर्चूर्चुर्गः कामिनीनिलकण्ठः काकाति कात्र तापिः रुग्णवर्णि वर

दसिद्धि वृत्त नमस्तु ॥ ६ ॥ **ॐ ॐ ॐ** काल जपः प्रपुवन नमिर्तः ध्यात
धाता पि धातः ॐ ॐ ॐ कात्र रूपः धृष्टि न धृष्टिर्तः धृष्ट माती क मातीः धृष्टः
धृष्ट कृमवर्धः ॐ मणि उवनगा कालदा भमि उल्लः गें गें गें निवृत्त यः मे
मलय हत नः सिद्धि वृत्त नमस्तु ॥ ७ ॥ **ॐ ॐ ॐ** काल नादः पयत्रिग
महमा वा महस्तु कपालः स्वं स्वं स्वं स्वं वा गहस्तु ॐ मरुति मिथि मा मूत्र
माता सुभरा त्रं त्रं त्रं त्रं त्रं माताः एवन विरुषिगा दीर्घा किं का कलाते ॥
दयी ॐ उच उच उचः एगवेमिव त्रद सिद्धि वृत्त नमस्तु ॥ ८ ॥ **ॐ ॐ ॐ**

श्रीवटिकास्तुप्रसमाह ॥ • ॥ ई नमः श्रीवटिकाये ॥ वृंश्रायणीहंस
 मातृताः पीताक्षीयातयासनीः धा रुकात्रविदुमृताचः वृंश्रायणीन
 मास्तु ॥ १ ॥ ईमा हृज्वरीवृषमातृताः स्वगा
 श्रीवृषः वासिनीः प्रि
 गुरुलाक विदुमृताच
 माहृज्वरीनमास्तु
 ॥ २ ॥



कीमात्रीम

पुनः
 नकादी
 गकाकुवि
 मातीवनमा
 धेकुवीगकुः
 हतीनवासनी गतुआकुवि
 सुगे॥ ४

वागदी॥

मध
 उगुवडि

मिअमी॥

॥५५५५५॥

॥५५५५५॥

॥५५५५५॥

मातृताः
 नकावासनी
 इमूडावःका
 सुगे॥ ३ ॥
 मातृताः हतिगात्री
 इमूडावः नात्रायनीनमाः
 ठाः नकांगी धातुडिकाः मीनाडः

॥ वागदीमहीवमातृ

विद्रुमुडाचः वाताहिवनमास्तुगे ॥ ५ ॥ ~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ हमा
हो हमासनीः चंकाडविद्रुमुडाचः माहन्डीवनमास्तुगे ॥ ६ ॥ ~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय~~
~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ तकाशुका अरुषिताः उमत्रयदोगहस्तुकीः विद्रुमुन्नाव
नमास्तुगे ॥ ७ ॥ ~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ स्थिताजी उवगवासनीः प्रिगुता
अविद्रुमुडाचः चक्रेष्वतीनमास्तुगे ॥ ८ ॥ ~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥
~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
कं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ जननी सर्वरगनाः सर्वसत्तापकातिनीः स

वदावहनादवीः संसात्रवागकुदनी ॥ त्वंभवसर्वसास्त्वं त्वंभवध्यानित्र
पिनी त्वंभवसुस्ति संहात्री त्वंभवस्तिनि त्रुपिनी त्वंभवसर्वत्रुपिनी त्वं
भवविज्वत्रुपिनी पी० ज्वत्रमहादेव देवदवीमहात्मन ॥ **ऐलवंहिः**
षमं त्रोटं धा तंगस्ति त्रुपिनी ॥ नीलांज न निरंदहं महाकायमहा
त्सवं नानाउजसमाकिर्त्तु नानावस्त्वनासुताः प्रितोचनमहागजा
भूमिसूर्यसमप्रता उवनामससं च दावाग्नि समगजसाः प्रिगुलम्
उत्पद्मिग ७ मत्रुगर्जनी धंजपात्रिजातकामूर्कवा स्वयं च संधना उला

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यथाऽपि विनाशाय कृपाय कर्तुं शक्नुमः
वस्तु धनं ॥ उक्ता कला लवदनीया प्रवर्त्मके निवृत्ता ॥ सातं कालेन सर्व
त्र ॥ नलास्ति प्रवृत्ता ॥ जीर्णमात्राधरादवी ॥ कपालाललिकालं
वृत्ताममिमहागं ॥ कपालं च उरुषं ॥ महाप्रतापनामित्यं ॥ नृपमा
नासदाप्रिया ॥ सर्वान्नस्यगं जं व ॥ कुगाविन्दुसंनिरं ॥ चउपी ० स्तिगा
नित्यं ॥ अष्टकं निवासिनी ॥ अष्टमूर्तिस्तिगादवी ॥ अष्टथागिनीप्रिय
रउपी ० स्तिगानित्यं ॥ रउकालिसमाह्वयः ॥ रउकागणककुलं ॥ वीतर

इं नमोस्तुते ॥ **अभिगंगं** त्रुवं चैव यत्तु अर्थकोट हेलवंः उत्सह हेलवं चै
यं कयाति हि वनस्तथा ॥ संहारत्रुवं चैव **अष्टव** हेलवाष्टं नमोस्तुते ॥ **सुखा**
नखा चिकाराञ्च स्वस्वतृपी स्वविर्यकाः स्वस्वकार्यवृत्तं नः दिव्या
करोतु रुमिषा ॥ दण्डि कुतुप्तालाञ्च कुतुप्ताञ्चैव चतुर्दशं पंचाग
कुतुप्तालं च कुतुप्तालं नमोस्तुते ॥ **नाथनाथमहा** नाथः आदिनाथं स
हात्मनाः आनाथसिद्धिनाथं कमीननाथं नमोस्तुते ॥ कुतुप्तालं च पी
० कुदीपनाथमहात्मनाः पुननाथं चतुर्दशं च नमोस्तुते ॥

सिन्धुनाथं नयनाथं कृष्णनाथं मूर्तिमः सकाविंशद्विपञ्चाशद्वीराः
जीमिन्मालुगः॥ सर्वेषां नाथसिद्धिनां सन्नानां च कृतत्वयंः व्यागस्य
नथवीरः नत्सर्वचनमालुगः॥ नृकाकालेऽपि कालयं यप० नि नालु
थः पठित्वा सर्वस्वाग्रामैः प्राप्तामिष्टियमूर्तिमः॥ ~~नाथयगजभक्तचिन्ता~~
तिः नाथयविद्युदवगाः नाथयस्तुलहं त्रार्गः नाथयद्वेदवेदवेदं॥ ना
थय रुवदात्रिदं नाथयटिपमूर्तिमः नाथयदग्निवीरादि नाथयत्स
र्वविद्युतः॥ नाथयत्सर्वविषं छात्रः नाथयदशियात्रयः नाथयत्त्राक

अज्ञानिः नागयस्सर्वविषाणकं, आरुता ताग्य मे उवय्य, धनधनयविवर्द्ध
नं, धर्मार्थकाममोक्षं, य एष, एते ताग्यमूर्तं, अद्विष्टिद्विष्टियेल
की, विशा ताहि सुगमि तं, प्राप्ता मिमिवं सुतं ४ य १ प ० तं अर्हं सुवं ॥
ॐ निग्रादवदवीकां सुमाक ॥ • ॥ विष्णु गवता यहेल म्व पत्र मं दव का
यसिद्धिविनायक ४ उमरा ग्य त्रु प सम्यन्तः दहि मे सु त्व संप्रदं ४ ॥ नमः
श्रीमहाका लाय कृष्णवर्ध्वा जमा त्रुटं, वृद्ध ता स न त्रुटं, कर्तिक पाले च
लेनाथ माहा का लं न मा म्यहं ४ ॥ ॐ आदया महा ता जा लो के पालं म्व

हृदिकाद यदि इति विना शोकात् पातं न भवति ॥ उन्नमस्तु कथा
जानां सर्व इति विना शोकात् पातं न भवति ॥ उन्नमस्तु कथा
धनं सविधिः ॥ अहमि विद्यः ॥ पूर्णं सच ॥ ० ॥ धनं गुणं पूजा दक्षिण ॥ वि
सर्जनं यावत् दनं ॥ ० ॥ ॥ इह पात्राणां सखा ॥ सविधिः ॥ अहमि वि
यः पूर्णं याय ॥ आकृष्टाः दिगुवति विद्यः ॥ इह मा न त्रहस्य दनं ॥ स्या
न किमन्य ॥ गुणं पूजा दक्षिण ॥ ० ॥ धनं पंचाक्षरं ॥ इह मा पंचाक्षरं
सिद्धिं को जाय ॥ कलसा रिष्य कविद्यः ॥ अहिर्वाय ॥ ससय काय ॥ वा

वः॥ • ॥ धनंति॥ वलिकाय॥ धनका॥ • ॥ अषाहमि॥ कनसा ह
जमं॥ सिद्धम्॥ ज्ञायक॥ ज्ञायका॥ • ॥ कर्मि॥ संजय॥ व॥ च॥ न॥ वि
चित्तमाका • ॥ संवत् १००० मि॥ रुद्रि॥ अदिः नवमि॥ अनिज्व
लवाल॥ ध॥ क॥ द॥ साय॥ सिद्धयका॥ • ॥ लिखितं॥ वृ॥ द॥ हा॥ ल॥ या॥ व॥ ज्ञा
चार्य॥ अ॥ द॥ व॥ उ॥ सु॥ ग॥ अ॥ द॥ व॥ ता॥ क॥ क॥ डों॥ ध॥ डों॥ ग॥ द॥ य॥ का॥ न॥ या॥ ह॥ ल॥ म॥ तं॥

ध॥ स॥ रु॥ स॥ ना॥ नं॥ ला॥ ए॥ या॥ ना॥ का॥ ल॥ का॥ ला॥ पंच॥ मा॥ हा॥ पा॥ प॥ ला॥ य॥ मा॥ गु॥ य॥ या॥ स॥ न॥

ध॥ स॥ रु॥ वृ॥ वा॥ हा॥ या॥ अ॥ न॥ ना॥ क॥ डों॥ गु॥ ला॥ ह॥ या॥ गु॥ ॥ - ॥ ५५

[illegible]

पूजा ला स्यात् ॥ उं कृष्णवर्मा हाक्रां वज्रामृत्तलं कर्त्तुं डिनिः तर्जनी पाण
धनं वेदाऽर्म्मत्राज नमस्तुते ॥ १ ॥ **यतिविषयः** ॥ उं दक्षिणे सर्वप्रमाणे पतय
सर्वं तयदा मज्जगति पीदा अभिर्थाऽं दं वलिः गृह्ण २ त्वस्य स्वाहि २ उं आ
४ हं रुड स्यात् ॥ ० ॥ **पन होम कनं पुन पूजा** ॥ जाय धूपः आ क पापु ध्वं न्या
समा स्यात् नवा यः ॥ उं अगति अभि य नमऽस्यात् ॥ उं ए स्म कृते स्म गाय स्यात्
४ ॥ उं अगति मुक्ति य स्यात् ॥ उं माता मह कृते य स्यात् ॥ उं सर्वप्रमाणे न व स्यात्
४ ॥ उं वं धू व र्जकु ले य स्यात् ॥ उं अ हात दक्षिण गती प्रणयिदि गाय स्यात् ॥ उं

ॐ मिदं शुभं चोत्तमं गाय स्यात् ॥ ॐ सिंहव्याघ्रादं गाय स्यात् ॥ ॐ व्यात्मापना
य स्यात् ॥ ॐ आत्रनेदत्तमनिद्रा ॥ ॐ वा एतं पुनपि अभवय स्यात् ॥ ॐ त्रात्रवद
उच्यते लोकगगाय स्यात् ॥ ॐ नत्रकं वूः मथे वूः पसूजीनिगगाय स्यात् ॥ ॐ दि
व्यक्रतिउतिरुमिस्त्रापितत्रायाधवाय स्यात् ॥ पिरुवंगमगायकमा
व ॐ मगाय ॥ ॐ शुभं शुलत्रं वन्द्य स्यात् ॥ ॐ व्यात्मगगाय स्वस्वमाहाति
यनम ॥ ॐ ॥ ~~दुष्टं~~ स्यात् ॥ ॐ नीलयांतीर्यकपुनदेवास
नानत्वाः ॐ किर्नेरुवकाकात्रः ॥ ॐ पुनंपुनमास्यते ॥ • ॥ बलि ॥ ॐ पुनवय

नी. गत्र कात्र पुत्र तृयना ऽमयः ऽज्जमानस्यः ऽशुश्रूषा गध मसि सुय्यादि
उरुरु ले संप्राप्ति काम नार्थः सर्वपुत्र तृयदा व ऽम नार्थः ॐ देव तिरुची
त्रः मत्स्य मांस दक्षिणितः सर्वय कत्र तसि ता यः अगति दा व ऽम नार्थः ॐ
ॐ ४ रु रु ४ स्वाहा ॥ • ॥ धनः हा कु म य वृ जा ॥ हा कु ज जं काः सि हः हा
क्रः हा क्रः खानः समयः अत्राः हा कु ॐ ताः मतविय ॥ • ॥ य च म्मी वा
यादि ॥ • ॥ धनः स्वताः सिः नं वृ ता डीः कु ग हा य क ॥ • ॥ धनः सु वा
गा अ प त्र य ॥ • ॥ धनदि ग व ति विय ॥ पति मा त्र वृ जा या य ॥ • ॥

स्वानकितन्य ॥ उं आ ब्र मं सु सु य र्म नं : द व वि पि र मा न वा य क चित् स य
त्रः म या द न न ता यि नः र कि मा या रु ॥ सर्व य उ स उ य ग त्वा र्च वि मु क
स्यः पि ग र सु स्य ना द तः पु रं स्यं म हा त्म त उ वाः यि न रि च तः ना ना पु र जि
ला द वा ता यः ग या सि त्रि सि मु क यं ति र्थ म का रु न स्ति तं त उ आ दि ग न्ध
ग दा ध त रं पु र न मा मि ह ॥ • ॥ ध न गु रू पू ज्ञा ॥ द डि न्ना ॥ • ॥ आ
सि धि ॥ • ॥ पं चा क स ॥ • ॥ स गं सि रु द्वा ह नि को का य ॥ • ॥
स म य का य ॥ • ॥ ध न पू ति च स्य ति ॥ • ॥ आ कि जी न्यः ज ज मा

नयानदिव्य॥ • ॥ पुनरति काय॥ • ॥ दक्षिणदिग्भसः लंघ्यः सुसि
गात्राः वृणोत्सा गाथा॥ स कृताः तं द्यस गाथा॥ • ॥ वृणोत्सा पुनरति
विद्यनस साय॥ • ॥ वृणोत्सा पुनरतिः ताद न नय॥ मा को ४॥ १

धनवलि को यनाम संख्या ॥ ० ॥
मध्य ॥ आया गाम्बलः इममभितु
उक्ताय ॥ उगवन्ति ॥ धरापि ध
संकाय ॥

अनगस ॥ देगि ॥ अगम ॥
उममनः मलिका न हने मन्त्र ॥
वेद्य ॥ कावया न ॥ दिगी ॥ वदि ॥
विज्ञा न ॥ आठ उग्र ॥ नेदि ॥ ० ॥
तुंथि ॥ पूर्य ॥ वधि ॥ दूगा ॥ स्वर्ग
सद्व ॥ आठ ॥ यागाये आगलो
क ॥ मय मन्त्रे मा भूषादि ॥
दयादि गां का पा न ॥ दयाक्रातः
दया न पा ॥ आप न ॥ दया न ॥ का
आपथिः चतु स्पर्श ॥ स्वय न ॥
गमः च न ॥ अचल ॥ जीवाः स्माः प
न मा स्माः क न ॥ का स ॥ दया नि
उग्र पा नः न ॥ सय ल ॥ दया न ॥
षागगि संसा न ॥ पया न ॥ ॥

पूर्व॥दिगगताऽ॥

ॐ नमो भगवते ॥ १ ॥
वक्रजंकिणी ॥ २ ॥
रुद्रजकिणी ॥ ३ ॥
प्रतिदधी ॥ ४ ॥
पक्षि ॥ ५ ॥
जामुद्रि ॥ ६ ॥
वक्रि ॥ ७ ॥
यसमि ॥ ८ ॥
कलंकरीगया ॥ ९ ॥
यदांगनाङ्गि ॥ १० ॥
दक्षिणक ॥ ११ ॥
वक्रवन् ॥ १२ ॥
कृत्तिगंगरेन्द ॥ १३ ॥
पुयागज ॥ १४ ॥
न्यागजद्वृक्ष ॥ १५ ॥
छेन्नाङ्गा ॥ १६ ॥
महापद्मनाग ॥ १७ ॥
विद्रवाङ्गा ॥ १८ ॥
वन्नागसिन्धुना ॥ १९ ॥
क्रोदिन्यग्र ॥ २० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

को मा भो ॥ —
या छु भी ॥ —
क्षि द दी ॥ —
वी न्मा ॥ —
स प्र ष्ठा ॥ —
क ष्य जे ॥ —
द म न्द्र षा ॥ —
ध न्ने र या न्ने क ॥ —
द व श कि ॥ —
न ते च भु ॥ —
की ट रे ने व ॥ —
अ ह स्मि स ऊ उ ॥ —
वि ऽ अ न्न न ॥ —
क ले ऽ न्द्र क ॥ —
प ष्म न्मा ग ॥ —
उ म न्द्र षा ॥ —
अ ह स्मि स अ म न्ने ॥ —
अ ग्ना जे उ ति ॥ —

दक्षिण॥दिगजो ज॥

वागाहि॥ —
चलासजकिमी॥ —
हिकमाहिमी॥ —
ऐमीददी॥ —
कपागी॥ —
क॥हि॥ —
वशीनी॥ —
पूजलकाय॥ —
इलेभु॥ —
इजालेरेनर॥ —
ऊननूदी॥ —
वेजयचभु॥ —
कपालेहेनर॥ —
नकामलरुग॥ —
रुमगारु॥ —
बुठवुठ॥ —
मीननाथ॥ —
गकलेसभमन॥ —
हरसगिगुह॥ —

नेमृष्टः॥॥दिगन्ता॥

वेङ्कटी॥ — १
उमृष्टी॥ —
वीद्वी॥ —
गीगा॥ —
धृगा॥ —
दागनिरगा॥ —
तुमृष्टी॥ —
ॐ नमो॥ —
न्यायायि॥ —
कीनेच॥ —
उमृष्टी॥ —
रयमि॥ —
नाउसाधिय॥ —
यकीठक॥ —
ऊनक॥ —
उंउद॥ —
लेओवनक॥ —
वृष्टी॥ —

पञ्चिम॥दिगलोग॥

ॐ नमो भगवते ॥
वन्द्याय नमः ॥
श्री गणेशाय नमः ॥
श्री विद्महे ॥
उग्रि ॥
कलशाय ॥
श्री गणेशाय नमः ॥
महेश्वर ॥
वन्द्याय नमः ॥
सकलेश्वर ॥
ॐ नमो भगवते ॥
श्री गणेशाय नमः ॥
कलशाय नमः ॥
वन्द्याय नमः ॥
श्री गणेशाय नमः ॥
कलशाय नमः ॥
महेश्वर ॥
श्री गणेशाय नमः ॥
कलशाय नमः ॥

वायुय॥ दिगलज॥

वामुन्म॥ — १
उग्रकिष्णी॥ —
क्षोदयी॥ —
वृक्षो॥ —
दीपा॥ —
रघवभागा॥ —
दृष्टाकलाता॥ —
धनुधला॥ —
कालिका॥ —
कालवधु॥ —
शिवनरैनेव॥ —
दशिकाठठु॥ —
वायुधव॥ —
उद्भवनेवृक्ष॥ —
वालेठाकिन्नाग॥ —
सिद्धिपा॥ —
द्योगधकसिधमन॥ —
अग्निधनेवृक्ष॥ —

उत्तर॥दिगल्लग॥

माहुं ज्वरी॥ —
द्यालेजकिन्नि॥ —
हंदिपिन्नी॥ —
गिन्निदवी॥ —
महाधात्मी॥ —
रुचिगी॥ —
मासि॥ —
शुक्ला॥ —
गल्लस॥ —
छेष्ठाकर्णरेनेव॥ —
रुद्रायभी॥ —
रुद्रव॥ —
रुद्ररेनेव॥ —
कोलागिदिद्रु॥ —
रुद्रगी॥ —
पुन्नागवृद्र॥ —
जयदादेनागी॥ —
गोहिनिपा॥ —
कर्णवील्लस्रजमन्॥ —
वद्रुद्र॥ —

ॐ अभन॥ दिग लो॥

महा लो॥ —
सिंघिनि॥ —
बोधनी॥ —
लो॥ —
सुवगभ॥ —
दव मा॥ —
ठकि न॥ —
०कि न॥ —
व धु॥ —
प॥ —
संज्ञा ल॥ —
वधि ग॥ —
वग क॥ —
ग॥ —
महा सि॥ —
कि लो॥ —
नारु क॥ —
धु॥

—
—
—

यक शोग सया याउ — अदि
अथा

यन ६ रेगवा अपय १
यन ६ फयं — यमक ३
यन २ कउ यन ४ — यं
गण — का रुगह ल दका
कयववा १६ — कासिकवि
कलिरुस्यं कवा दका कवा दप स्याक
सोमाकी — चिकं अलिस्यं न
माग मास — तामोः — वाअः ५१ १
अ०: ३११

उशुशुजाकि — रुं १ — जाधुय
हाकउजाकि — रुं १ — अ०
दवां — यल — १६
नाकी — धू — माकी —
लनि शुग —

वाग — १ — कंजदमा —
यल — १ — कंसवागवा —
यल — १ — सिजवागवा —
यल — १ — कलसपासिरुवा
यं दवाउ — अ० —
समय अमाजालं माकी —

अमयं कि जाकि — रुं —

५६: ५०६: अ०: ५१६: गुगलादि ६:
उमनालापले!

पुजाए कलें॥ मा की - क -
 कलसि - सगुलो - कसकंसिद्ध
 पंचसुगु - कसका - उरुं कामा
 गलवन - सिद्ध - कसु - क
 गुं - सिद्ध - धुं - धुवा - सिले
 धुं - पका - गायत - कणात
 सोइइ साया - सावि - साय - साधन
 धल - कफि - साय - वा क १५॥
 वा क मलि जा गं जाग या मात - केश -
 लुपले - ओह पल - दिहि
 ओह या वड माइतु या सु या वि
 मापुं गु माका - वसु का व क १
 कसया वा मा का - उरु - धी २
 वाग वसु - क ३ -
 झाड - क ५ - गो सु क ६
 ला क - क ६ - आरु क ६
 झाड - क ६ - छि को व क ६
 पंचपना क धुं वा का - मा का

गा - पु १ - धनि - पु १

कुसुममो नमः शृंग्या हुं ह्रीं नमः
स्वामिः ब्रह्मसूक्तोऽसि हि माता
हुं ह्रीं कादशा मन्त्राः लोकपालाः
हुं ह्रीं कादशा मन्त्राः लोकपालाः
पालं मन्त्रं नमामहे ॥ ० ॥
हुं यन्मन्त्रं कर्मसहायित्वं पहाय मा
यि द्या यत्नं किं तां कृतं त्वं
नोलदं मन्त्रावितं उक्तिं वत्स
कृतां कुं दशकोटं नमामहे
साधको हृदि दधु क ध्यवत्सलः
गीता हृत्पावकः कथाधायवना
त्रयि शृंग्या तुक्ता सुगता सुता
गुणवैदशादिग्याणि सुहृताः सु
कान्यमात्रादयः ॥ कृता सुस्यत्रिः
कीर्तयन्ति सर्वजगतां विष्णुं
अर्कं कुर्वं ॥ ० ॥ गता सु ॥
मातां कृता मातां नमः ॥
समयकृता यः मन्त्रः यक्ष मन्त्रः
वात्स्यादि ॥ ० ॥ ७८ ॥ ० ॥

मसोऽप्याकः समोऽकः समाधनः॥
प्रियायप्रवरं वंशः प्रुः प्रोक्ताः प्रुः
धमः प्रुः॥ **स्वावतं प्रुवतं योः**
सुप्रुः सुलः सेंचयः अंगमं प्रुव
तं पाः वसेंता तं मः कः॥
पादिः मः यः के प्रास्वयसति
गठहृदया मृदाया गः सुमय गत
गलः मः सुहः॥ बज्रः कोटः मल
कोटः कः॥ प्रुल यदा यकः मल
यिनय इकाः प्रुव प्रोडः एयं कल
॥ **गः मः मः मः मः** चर्म कर्म
मलः वलः सचर्म सलः मयः
मोः चित्तः यिः वः कः॥ सर्वः
चिमलः यः प्रुसुवा यमः सुह
नः॥ गगः सुदिः समाधः यः यिः
गगमः सुतः॥ **ज्वाका गनः**
जिः यः सर्वः एगः मलः वलः वि
एगः गविः एगः जाः सर्वः साप
प्रिः प्रुतः॥ **नमः सुः** नमः

पूर्वसमाप्त ॥ २२ ॥

ॐ कलि मयज्जात्रमयहं रुद्र
स्वाहा ॥ अत्र २१ मन्त्रः ॐ का
यका ज्ञाजुः यस्तुहोतः अत्र २२
लासः धनुः कितनथस्तुलः ता
उंजीजीजी रुद्रस्वाहा ॥ अत्र २३
ॐ का यका एवहो गायत्र
ज्ञाजुः अत नृत्वास्तनाय ॥ तात्र
उंघघघाठयः किलयः सवर्तुष्टा
नामा लयः जृधाल एय नासनी
प्रधात्रहं का तः उत्रत एदकाया
गीनी मम । तज्जसिद्धि तयः
हं रुद्रस्वाहा ॥ शालिकथि पूर
यतुर्दिगसं गायः गात्रन ॥ २४ ॥
उं मेदनि मात्रवन्धः हत्रसिद्धि क
यवं ज्ञा स्त्रहं रुद्रस्वाहा ॥ अत्र २५
कण्वक विष्णु ॐ का यका धूपथ
मः ॐ का यका ज्ञाजुः यं कयके
मात्रनडावसा ॥ २६ ॥

ॐ नमः ॥ यागमम्यत्राय ॥ यागमम्य
त्रैलनाभीं ॥ यागमागमुदर्शनम् ॥
महाष्ट्रं महात्मानं ॥ एतद्दीप्तिसिद्ध
प्रसूते ॥ संसृष्टेयि मूर्त्यधालैः विष्णु
मूर्त्यमत्रयकैः महावीरमहोन्नतः य
कुंजीमस्तुनायकं ॥ उग्रमूर्त्यं उन्नमनी
तः ॥ निशुंजीगगलं ज्वलं ॥ उक्ताष्टक
गतं वन्दः ॥ उन्नदं उन्नमसध्वजं ॥ या
गज्वलं निर्विकारां ॥ निरंका नमिता
मयं ॥ नितकृष्णनिगाकालैः ॥ अक्षिणी
यंकत्रा निवि ॥ क्षीनमूर्त्यं हन ननि
विः ॥ हनं हातगतध्वजः ॥ सुखास्तु
अगतं सुस्त्रं ॥ महाकाल एवानक ॥
क्ष्णादिमूर्त्यसर्वहः ॥ व्यापकं यत्रमः
ज्वलं ॥ सिद्धिपदं सुखिवत्रः ॥ यत्रयत्र
दंतध्वज ॥ दयादयं दयाध्वज ॥ हनं सुत्रं च
दयादयादयमस्तु ॥ उग्रपदं मुक्ति
दैवः ॥ अष्टमं सुमत्रा विव ॥ काता
मित्रमृदुकां गङ्गा ॥ कमनियं कूलप्रदं ॥
कात्रिजं च एतं ॥ अष्टमं यत्रादिगं
तध्वज ॥ कमलद्वीप एतन्नाथः ॥

हमवन्निष्ठलकनीः सायुत्रिय
नमस्तुतुः सायुत्रियं प्रायामम
ॐ॥ ॥ गिनमस्तुतुः ॥ ॥ योत्र
नकायिभतादिः यिकचाए
रुहायुनीः यमतागपुलादयी
नमस्तुतुः सायुत्रियः ॥ ॥ ये
पुर्व्यमुकनिगसाः मर्दनिस्र
कनिगुसाः काखार्दकदनिः
नमामिदियगुपिनिः ॥ ॥
उं नमस्तुतुः नमस्तुतुः ॥ ॥
निये ॥ नमस्तुतुः नमस्तुतुः ॥ ॥
यनसन्निरे ॥ सर्वसत्तदिताथय
यिग्राताहि नमस्तुतुः ॥ ॥
उं नमस्तुतुः प्रागाम्यतायः सर्वता
वात्मकं नार्थः कोगिनिक्कालना
यकः कोगाम्यतेजगं नार्थः सर्व
सत्यसर्वजः ॥ यत्रमायमस्तुतुः
समस्तानगः समस्तुतुः सर्वता
वजगर्वायगपगः ॥ महानाग

ह्रीं काम स्वाहा ॥ ॐ पद्मां काम
स्वाहा ॥ ॐ विद्यां काम स्वाहा ॥ ॐ
श्रुतं ताम स्वाहा ॥ ॐ ठ किं ताम स्वा
हा ॥ ॐ नीलं दक्षं पस्वाहा ॥ ॐ
महावतां य स्वाहा ॥ ॐ ड कीं व
काम स्वाहा ॥ ॐ तुम्हा ताम स्वा
हा ॥ य ऊ पुष्पं पुष्पं क स्वाहा ॥ ॥

पद्मां काम ताम काम स्वाहा
॥ ॐ नीलं वर्धं महावीलं रवर्धं
पां धर्मं क रुजनीं ॥ सर्व मा तमि
हं गायः ॥ ॐ च लवीलं नमस्तु
॥ ॐ पुष्पं ताम नमस्तु ॥ स
र्वं पुष्पं दायकं ॥ अं वि क ॥ ॐ
इवर्धं ताम ॥ ताम तलम काम
ता ॥ ॥ ॐ कृत्तं वर्धं महाया तं
स कृत्तं मरिषधी ॥ इ धर्मं
रगं संहर्कि ॥ क्रोत्वा ज नमा
म्य हं ॥ १ ॥ महा ह्रीं न ए वा दः

ॐ ह्रस्वात्रमिणयस्वाहा॥ ० ॥
ॐ प्रणिसत्रायस्वाहा॥ ॐ सोहप्र
प्रमईधमयस्वाहा॥ ॐ महोमात्र
मित्रयस्वाहा॥ ॐ महोमित्रय
यस्वाहा॥ ॐ महोमन्त्रय
त्रयीयस्वाहा॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
कायस्वाहा॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
स्वाहा॥ ० ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
चिपत्रयस्वाहा॥ ॐ यस्मायप
त्रायिपत्रयस्वाहा॥ ॐ यत्रधम
यनागाचिपत्रयस्वाहा॥ ॐ
क्रोधेतायकक्राचिपत्रयस्वा
हा॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
स्वाहा॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
त्रयस्वाहा॥ ॐ वायुयपवधम
चिपत्रयस्वाहा॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
त्रिगचिपत्रयस्वाहा॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
तुयन्मीनकायस्वाहा॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ साधनिः शतवक्त्रः नैत्रान
मोः को गाम्यतः ॐ डादिच्छु
दिगलोकपात्रादिः दशक्रौ
चः दवदधीकायाहनायः
कास्मान्तावथय ॥ ० ॥
त्राय ॥ ० ॥ **स्वरावसूत्रा**
याद्यादिपूषं न्याय ॥ ० ॥
स्वानधीय ॥ उंचडमहात्राय
दमयस्याहा ॥ नितवर्धय
स्याहा ॥ उञ्चेलायस्याहा ॥
उकुक्षीवत्रायस्याहा ॥ उस्व
गायत्रायस्याहा ॥ उं पित्तव
लायस्याहा ॥ उं नक्षत्राय
स्याहा ॥ उं उष्मात्रायस्या
हा ॥ उं द्रव्यकीयस्याहा ॥ उं
माहवकीयस्याहा ॥ उं पित्त
गवकीयस्याहा ॥ उं त्रागवकी
यस्याहा ॥ उं क्षुब्धायकीयस्या
हा ॥ उं वर्ज्यागिणीयस्याहा ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ महो भो बभभय ॥
उं क व नि नि हि ग वा म ज्ञा नू स र्थ
ह सि सु त्व र्क ग त ग त्रि ग रु मू ष्ठा
ग र्क नी ण कि पा णं नि वि दि ग य
न स त्रि त्रं च उ य ग व ड य कः स
म य उ र य र कं वि द्न ह का य
ना यं ॥ ॥ ज्ञा य च य ॥ नि ला
ऊ ना दि ॥ ॥ स्व ल व सृ क्ता
पा श्या दि पू ष्ठं न्या ण ॥ स्था न वी
यं ॥ ॥ स्मि त्र या य ॥ ॥
थ न ग वि त्र ज्य ल स हां मा या र
ग व णिः ह व कः नै त्रा त्माः को
गा न्व ल ग्ना ज्ञा वा ह ना य ॥ ॥
ध्व य ॥ उ र ग य न् प्र म ग शी ण
वि त्र ज्य ल व ड म हा गो ष णः
म हां मा या र ग व णिः पु णि स
नाः स्था ह्नु पु म र्द्धि नीः मा हां मा
पू र्णी ज्ञा ग व णिः म हा म न्द्रा त्र

सिं रे वा वे का वुं मा ॐ वा मला कू ग यां । ह स्वाहा
सिं ग चा वा का ना उ वे वे वा ॐ महा कू रे यां पत्रिग
सिं ले महा मा पु का के वा ॐ वा ॐ महा कू यां काक
सिं ग ग वे वा का के वा ॐ वा ॐ महा कू रे यां यपा
सिं ले ग ग मा का के वा ॐ वा ॐ महा कू रे यां धतित्र
सिं ग ग मा का के वा ॐ वा ॐ महा कू रे यां गहंगत्र
सिं उ मा रे को को म वा ॐ वा ॐ महा कू ग ग सिमावहि
सिं थक

